अमर चित्र कथा

पृथ्वीराज चौहान

क्र. ६०४ | रु. ९०



तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्त्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके – अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज़्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : **www.ack-media.com.** अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर **www.amarchitrakatha.com** से ख़रीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को पांच वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य तथा धार्मिक कथाएं
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

लोक कथाएं तथा हास्य कथाएं
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

शूरवीर
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

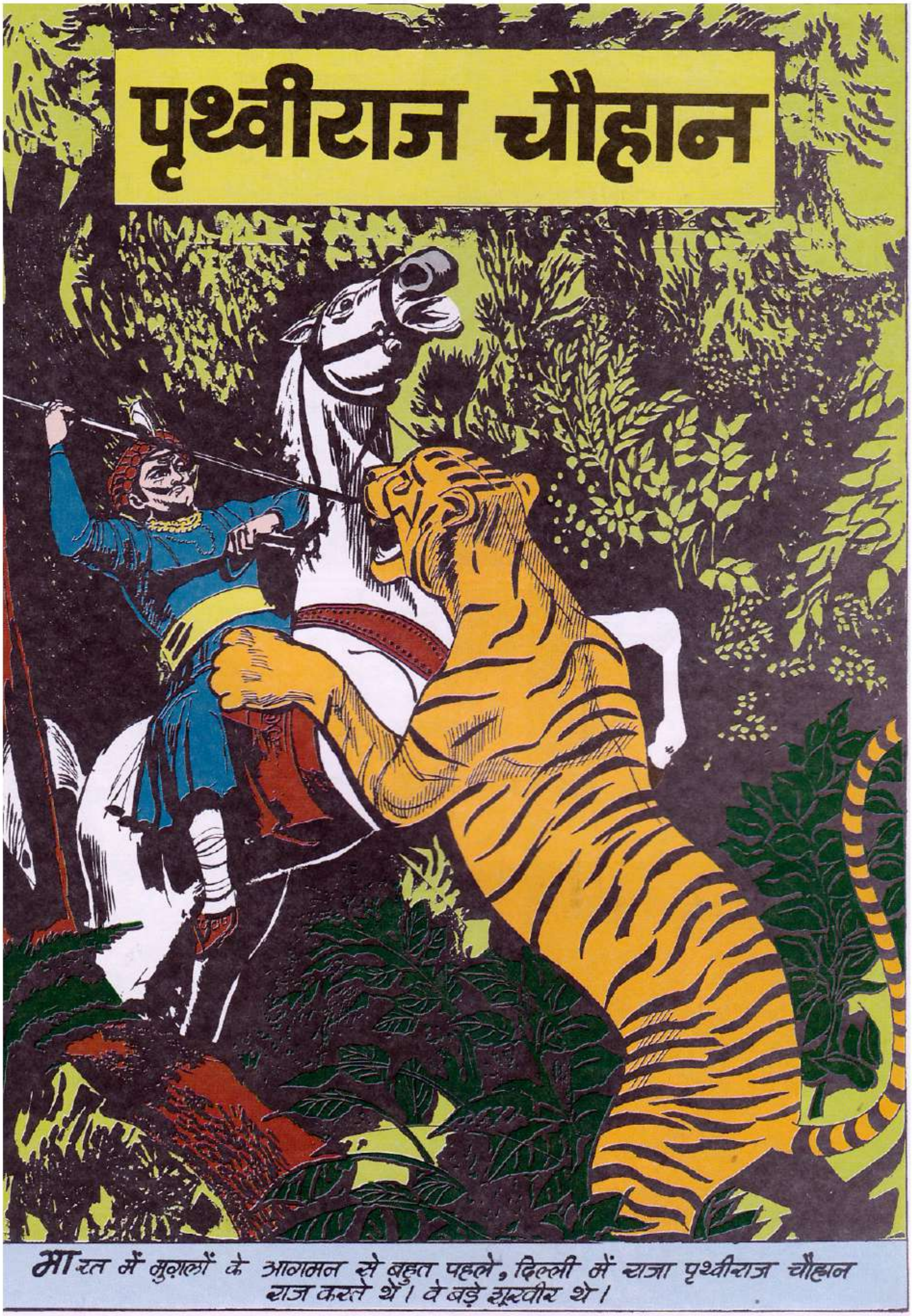
दूरदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ठ कहानियाँ

कथा	चित्र	संपादक	मुखपृष्ठ
यज्ञ शर्मा	पी.बी.कवाडी	अनंत पै	सी.एम.विटणकर

Amar Chitra Katha Pvt Ltd

ISBN 978-81-8482-314-1
Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor,
Dhantak Plaza, Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri - 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249188881/2
Email: customerservice@ack-media.com


पृथ्वीराज चौहान
भारत में मुग़लों के आगमन से बहुत पहले, दिल्ली में राजा पृथ्वीराज चौहान राज करते थे। वे बड़े शूरवीर थे।


उन्हीं दिनों कन्नौज का शासक था राजा जयचंद। कन्नौज का राज्य दिल्ली से बड़ा और अधिक शक्तिशाली था।
हमारी आकांक्षा सारे भारत का सम्राट बनने की है।
तो महाराज, आपको सम्राट बनने के लिए राजसूय यज्ञ करना होगा।
विचार अच्छा है। जो भी हमारा विरोध करेगा उसे कुचल कर रख देंगे।
सब राजाओं को सूचना भेज दो कि वे हमारा प्रभुत्त्व स्वीकार करें और राजसूय यज्ञ में उपस्थित रहें।
जो आज्ञा महाराज की।



जिन नरेशों ने जयचंद का प्रभुत्त्व स्वीकार नहीं किया उन्हें उसकी सेनाओं से लोहा लेना पड़ा।
अन्त में और सब राजाओं ने जयचंद का प्रभुत्त्व स्वीकार कर लिया – नहीं किया तो केवल एक ने।
हम बहुत प्रसन्न हैं कि सब राजाओं ने हमारी प्रभुता अंगीकार कर ली... परन्तु पृथ्वीराज का क्या?
वहाँ से दूत अभी लौटा नहीं है, महाराज।
पृथ्वीराज जयचंद के दूत पर बुरी तरह क्रोधित हो गये। उनके गुरु ने दूत से कहा–
जा कर अपने स्वामी से कह देना कि दिल्ली पर कोई राज करेगा तो वह केवल पृथ्वीराज।


पृथ्वीराज इस बात पर इतने झल्ला गये कि अपना क्रोध ठण्डा करने के लिए शिकार पर चले गये।

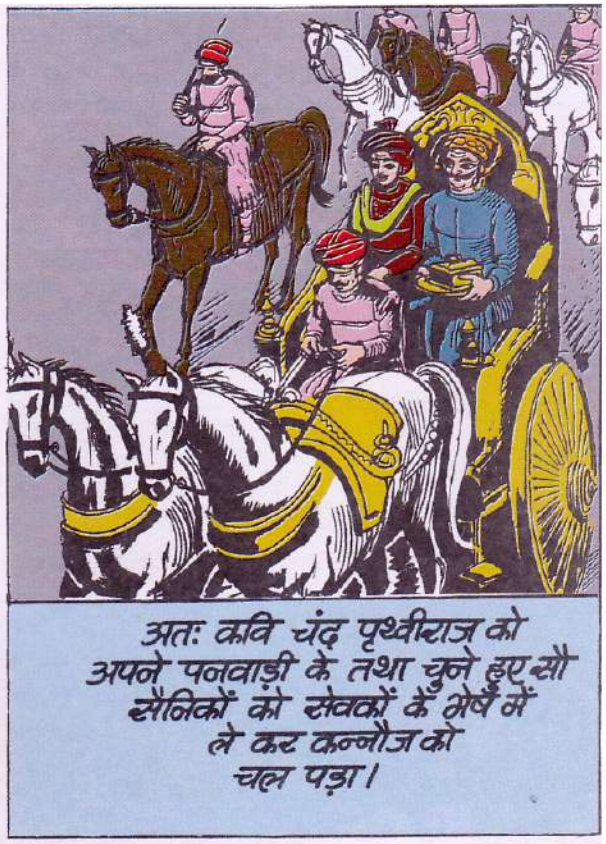

तब तक जयचंद का दूत वापस कन्नौज पहुँच गया।
महाराज, पृथ्वीराज ने आपका प्रभुत्त्व मानने से इन्कार कर दिया है।
हम दिल्ली पर आक्रमण कर के उसे मज़ा चखायेंगे।
परन्तु महाराज, यज्ञ की तिथि करीब आ पहुँची है। दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए पर्याप्त समय नहीं है।
ठीक कहते हो, मंत्री जी। यज्ञ पूरा होने तक हम रुकेंगे। यज्ञ के साथ ही हम अपनी पुत्री, संयोगिता का स्वयंवर रचाएंगे।
स्वयंवर में संयोगिता आमंत्रित नरेशों में से किसी एक को अपना पति वरण करेगी।
और पृथ्वीराज को नीचा दिखाने के लिए मेरे पास एक लाजवाब योजना है।



परन्तु संयोगिता, पृथ्वीराज से मिले बिना ही, केवल उनकी वीरता के गुणगान सुन कर उनसे प्रेम करने लगी थी।
यह स्वयंवर नहीं होगा।
लेकिन तुम्हारे पिता ने तो राजाओं को निमंत्रण भेज दिये हैं।
मैं उनमें से किसी का वरण नहीं करूँगी। मैं महाराज पृथ्वीराज को चुन चुकी हूँ।
परन्तु वे तुम्हारे पिता को पसन्द नहीं।
क्यों? इसलिए न कि उनमें पिता जी का सामना करने का साहस है। मैं विवाह करूँगी तो केवल पृथ्वीराज से।
पृथ्वीराज को जयचंद द्वारा किये जाने वाले अपमान की योजना और संयोगिता के प्रेम की सूचना मिली।
कवि चंद, मेरे मित्र, मेरी आन पर आ बनी है। मुझे संयोगिता से विवाह करना ही होगा।
परन्तु करेंगे कैसे, महाराज?



जयचंद मुझे तो कन्नौज में प्रवेश करने नहीं देगा, परन्तु तुम्हारे जैसे विद्वान और कवि को नहीं रोकेगा।

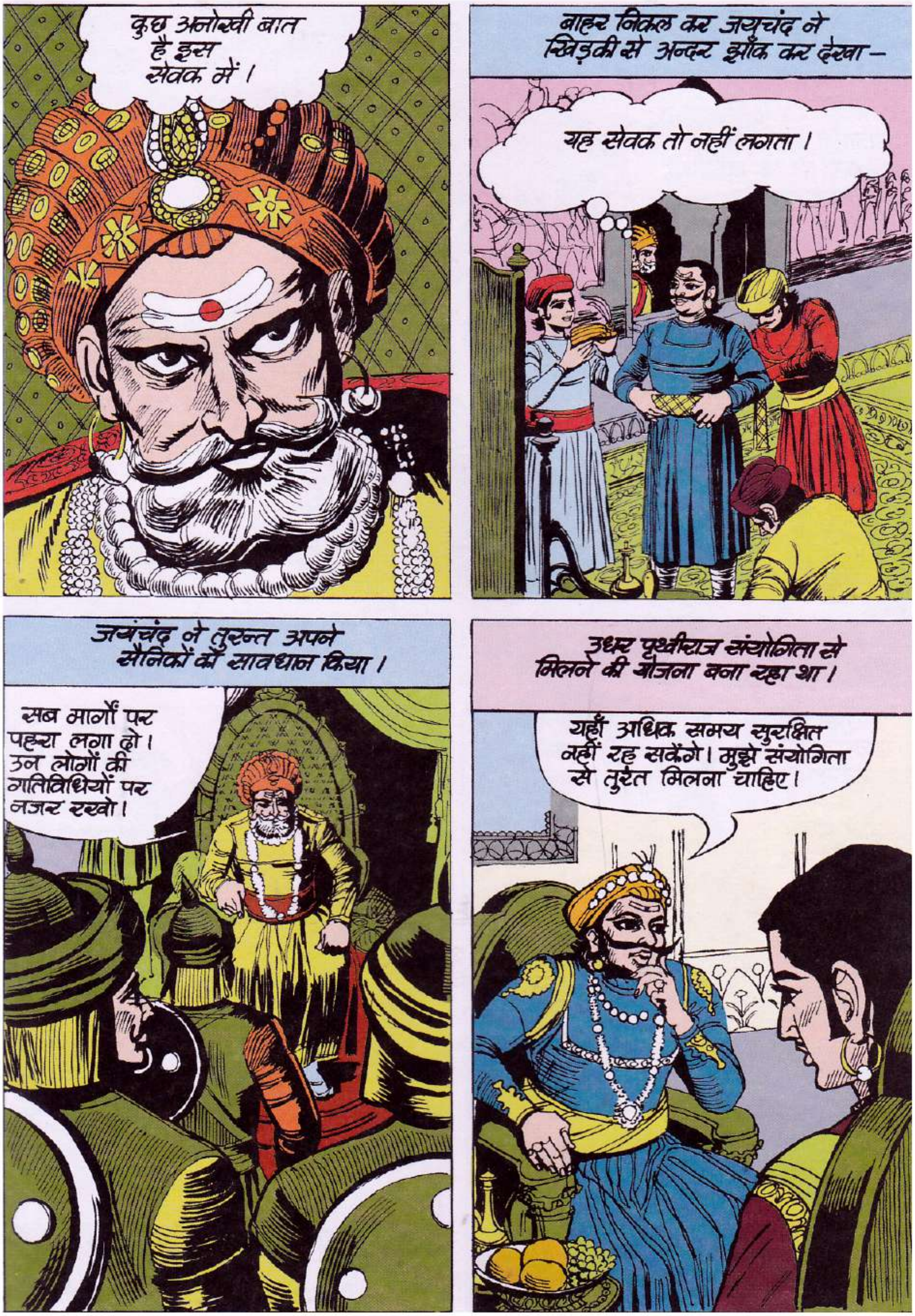


अतः कवि चंद पृथ्वीराज को अपने पनवाड़ी के तथा चुने हुए सौ सैनिकों को सेवकों के भेषों में ले कर कन्नौज को चल पड़ा।



कई दिन यात्रा कर के वे कन्नौज पहुँचे।
वह चमचमाता हुआ स्वर्ण-कलश जयचंद के महल का है, महाराज।
मुझे महाराज मत कहो – मैं तुम्हारे सेवक के भेष में हूँ।


जयचंद ने कवि चंद का बड़ा आदर-सत्कार किया।
मैंने सुना है पृथ्वीराज युद्ध करने में बड़े कुशल हैं!
हाँ - शत्रु तलवार उठाये-उठाये तब तक वे पचास वार कर चुकते हैं।
जयचंद को कवि चंद का यह उत्तर पसंद नहीं आया, फिर भी वह चुप रहा।
जा कर अतिथि की सुख - सुविधा की व्यवस्था करो।
जयचंद अपने महल में लौट आया।
अगले दिन जयचंद फिर कवि चंद से मिलने आया।
आशा है, आपको कोई असुविधा नहीं हुई होगी।
बिलकुल नहीं। बिराजिये।
कवि चंद के पनवाड़ी का व्यक्तित्व जयचंद को बहुत जँचा।
यह आदमी साधारण सेवक नहीं दिखता।


कुछ अनोखी बात है इस सेवक में।
बाहर निकल कर जयचंद ने खिड़की से अन्दर झाँक कर देखा –
यह सेवक तो नहीं लगता।
जयचंद ने तुरन्त अपने सैनिकों को सावधान किया।
सब मार्गों पर पहरा लगा दो। उन लोगों की गतिविधियों पर नजर रखो।
उधर पृथ्वीराज संयोगिता से मिलने की योजना बना रहा था।
यहाँ अधिक समय सुरक्षित नहीं रह सकेंगे। मुझे संयोगिता से तुरंत मिलना चाहिए।

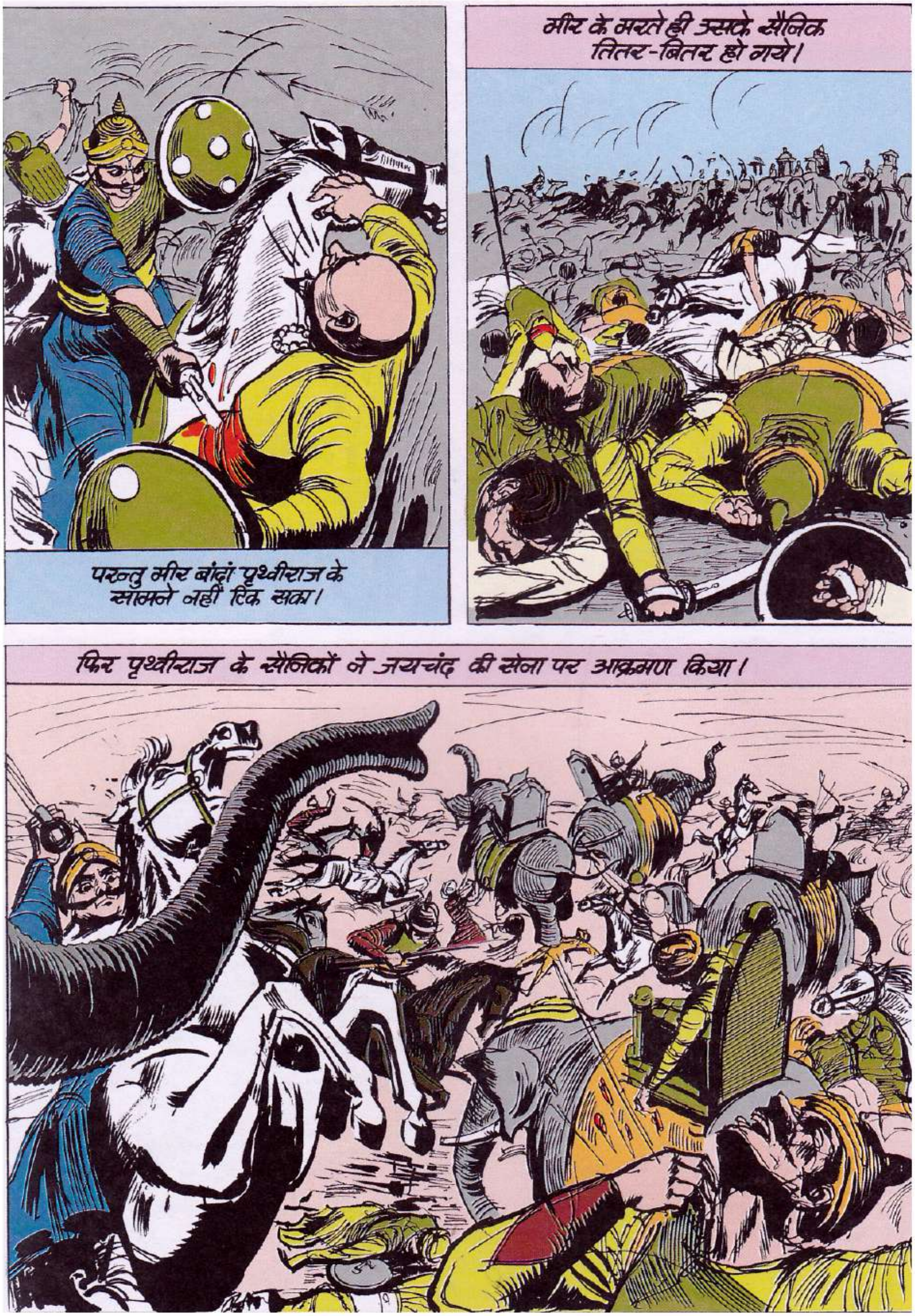

जयचंद को पता था कि उसकी पुत्री पृथ्वीराज से विवाह करने के लिए निश्चय कर-चुकी है, इसलिए उसने योजना तुरन्त बदल दी।
मंत्री, सभी निमन्त्रित राजाओं को सूचित कर दो कि स्वयंवर कल होगा, किन्तु यज्ञ बाद में होगा।
महाराज की जैसी इच्छा!
एक घबराया हुआ सिपाही पृथ्वीराज के पास भागा भागा गया।
महाराज, समय नहीं है! स्वयंवर कल होने वाला है।
इतनी जल्दी?
हाँ, जयचंद आपको अपमानित करने के लिये द्वार पर आपकी प्रतिमा रखने जा-रहा है।
तो उसे मुझे अपमानित करने की भारी कीमत भी चुका-नी पड़ेगी!


दूसरे दिन स्वयंवर के समय पृथ्वीराज की प्रतिमा द्वार पर रखी हुई थी। और संयोगिता को उपस्थित राजाओं के बीच, जिनके साथ उनके चारण भी थे, अपने पति का चुनाव करने के लिए ले जाया जा रहा था।
मुझे आशा थी कि वे यहाँ वेश बदलकर मौजूद होंगे...
....अब मैं क्या करूँ....
अन्त में संयोगिता ने वरमाला पृथ्वीराज की प्रतिमा के गले में डाल दी!
... केवल पृथ्वीराज मेरे पति हो सकते हैं।


रोको इन्हें!
संयोगिता पृथ्वीराज के साथ ही घोड़े पर सवार हो कर चल दी।
चलो साथियो– लड़ कर रास्ता बनाना है!


जयचंद की विशाल सेना ने उन्हें घेर लिया।
जो भी हो, पृथ्वीराज बचकर न निकलने पाये।

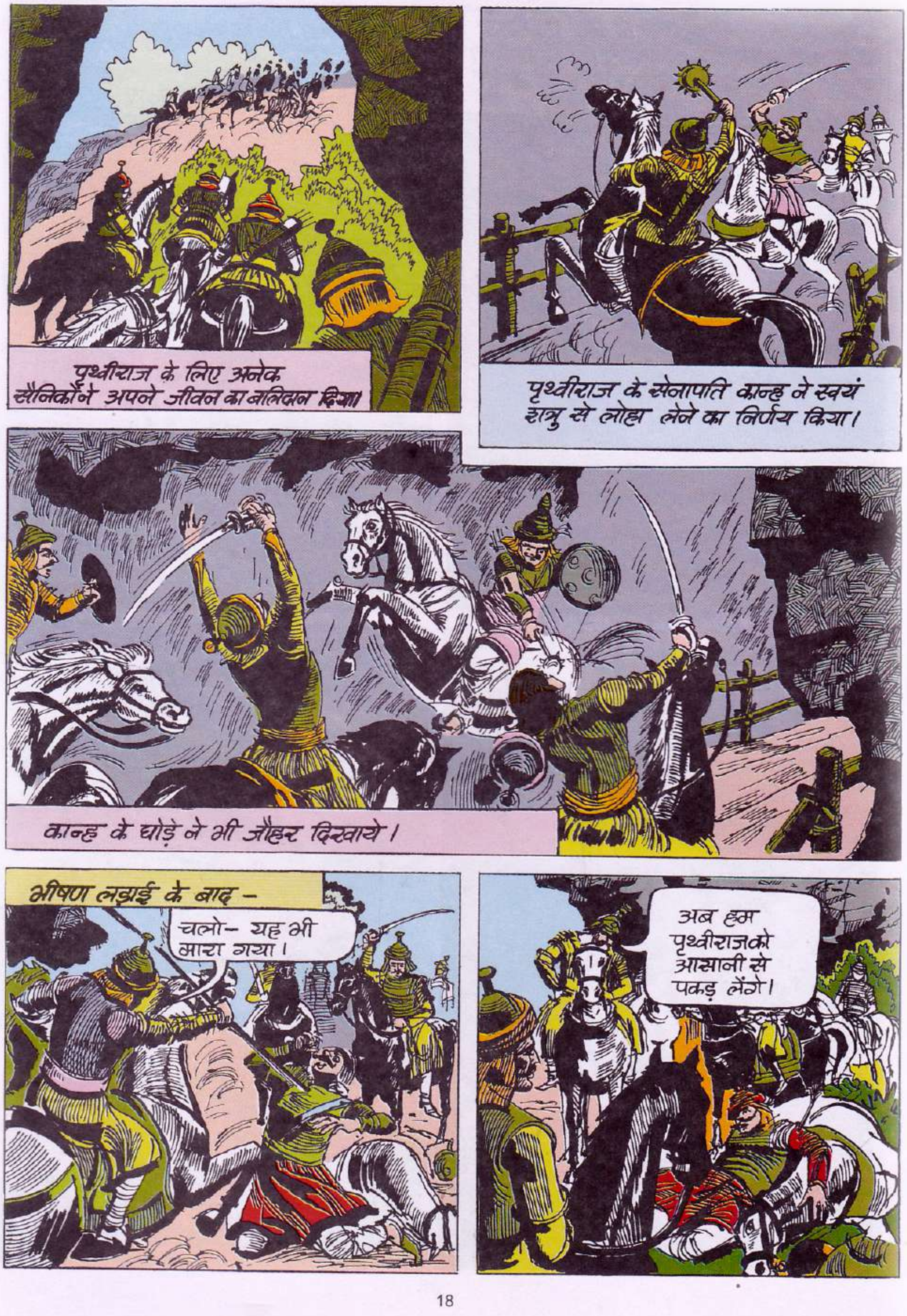

पृथ्वीराज पर पहला धावा जयचंद की सेना के फारसी अधिकारी, मीर बांदां की टुकड़ी ने किया।

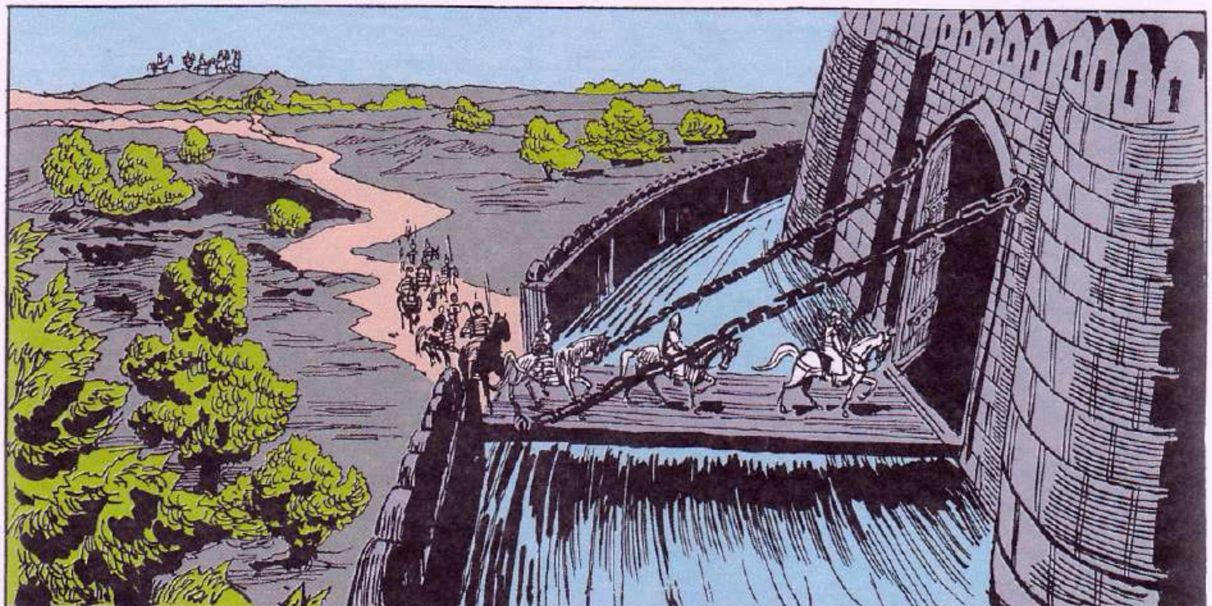

परन्तु मीर बांदां पृथ्वीराज के सामने नहीं टिक सका।
मीर के मरते ही उसके सैनिक तितर-बितर हो गये।
फिर पृथ्वीराज के सैनिकों ने जयचंद की सेना पर आक्रमण किया।


महाराज पृथ्वीराज की जय!
पृथ्वीराज और उनके सैनिक शीघ्र ही शत्रु का घेरा तोड़ कर निकल गये। सैनिक बहुत ही प्रसन्न थे।
परन्तु यह प्रसन्नता क्षणिक ही रही। जयचंद ने मार्ग में आगे भी बड़ी संख्या में सैनिक तैनात कर रखे थे।
इस बार पृथ्वीराज बुरी तरह घायल हो गये। फिर भी उन्होंने बाण को खींच कर निकाल दिया।
हमें अपनी योजना बदलनी होगी। हमें पहाड़ियों का मार्ग पकड़ना चाहिए- तो शत्रु का सामना करने में सुविधा होगी।


पहाड़ियों में सुरक्षा की सुविधा तो थी परन्तु आगे बढ़ने की गति धीमी पड़ गयी। इसलिए शत्रु सैनिक उनके निकट पहुँचने लगे। तब एक संकरे पहाड़ी मार्ग पर -
हम एक सैनिक को शत्रु को अटकाने के लिए यहाँ छोड़ दें... बाक़ी लोग दिल्ली की ओर चलें।
नहीं -
- मैं कायर नहीं हूँ - सबके साथ मैं भी यहीं शत्रु का सामना करूँगा।
आपकी वीरता पर किसी को सन्देह नहीं, महाराज। परन्तु हम यहाँ युद्ध करने नहीं, आपके अपमान का बदला लेने आये हैं -
- और हमारा यह लक्ष्य तभी सिद्ध होगा जब आप अपनी वधू के साथ दिल्ली पहुँच जायें।


बहुत समझाने-बुझाने के बाद पृथ्वीराज दिल्ली जाने को राज़ी हुए। शत्रु से सामना करने के लिए वहाँ बांघ राय को छोड़ा गया।
बाघ राय बड़ा निर्भीक योद्धा था।
परन्तु वह अकेला था।
बाघ राय काम आया और शत्रु सैनिक उत्साहित हो कर आगे बढ़े।
सावधान-
एक और
सैनिक
रास्ता रोके
है।


पृथ्वीराज के लिए अनेक सैनिकों ने अपने जीवन का बलिदान दिया।
पृथ्वीराज के सेनापति कान्ह ने स्वयं शत्रु से लोहा लेने का निर्णय किया।
कान्ह के घोड़े ने भी जौहर दिखाये।
भीषण लड़ाई के बाद –
चलो– यह भी मारा गया।
अब हम पृथ्वीराजको आसानी से पकड़ लेंगे।



परन्तु तब अवसर निकल चुका था। पृथ्वीराज दिल्ली के अपने दुर्ग में पहुँच गये थे।



पृथ्वीराज की सेना से टक्कर लेने से डर कर जयचंद निराश लौट गया।

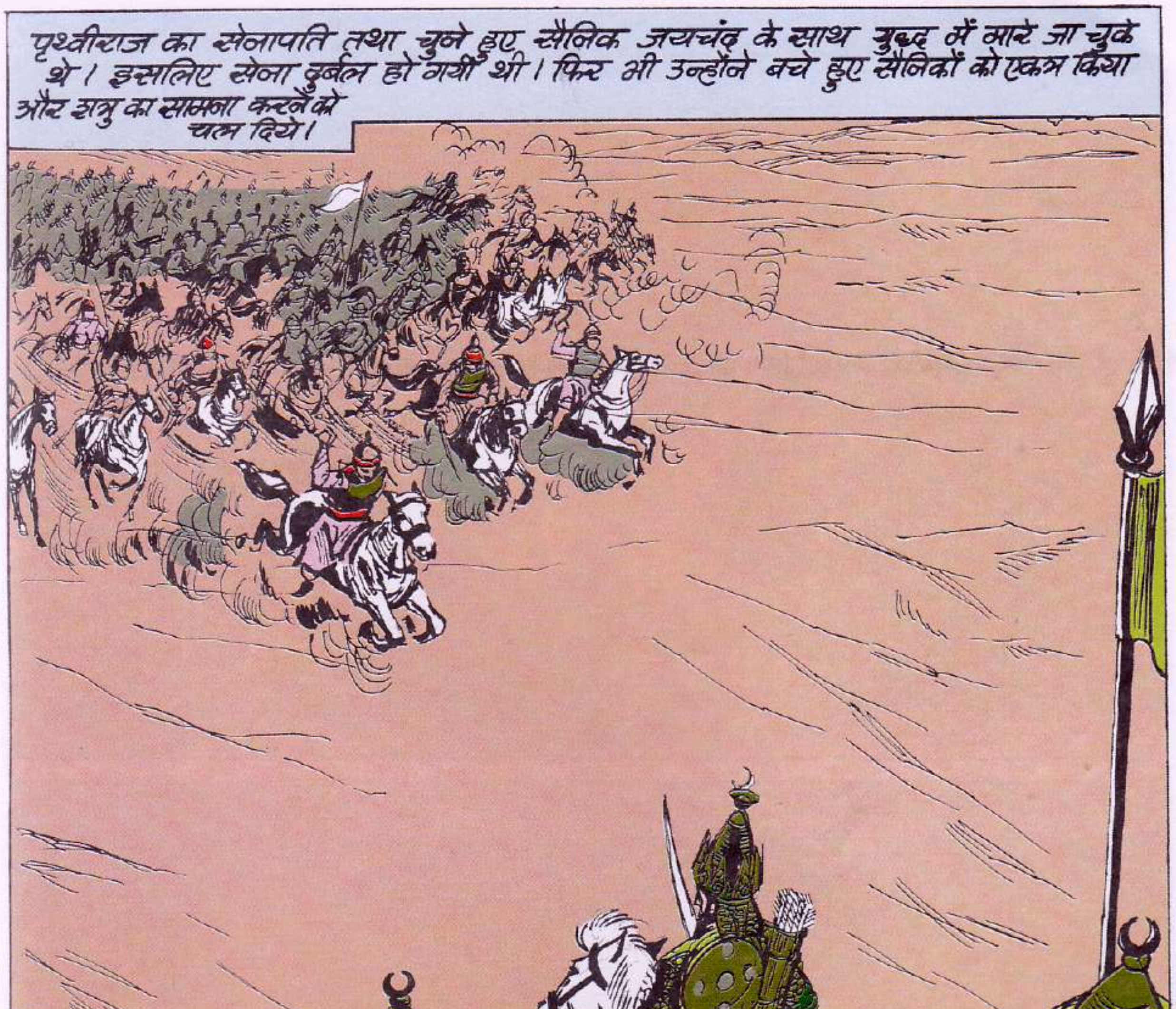

दिल्ली में खूब खुशियाँ मनायी गयीं।
महाराज पृथ्वीराज चिरंजीवी हों! महारानी संयोगिता चिरंजीवी हों!
फिर से शान्ति स्थापित हो जाने पर पृथ्वीराज अपनी नयी महारानी के प्रेम में लीन हो गया।
कई दिनों से महाराज के दर्शन भी नहीं हुए।
वे महल से बाहर ही नहीं निकलते।


सब लोग दुखी थे।
विवाह के बाद हमारे महाराज ने दरबार में कदम ही नहीं रखा।
पृथ्वीराज के गुरु भी दुखी थे।
खेद की बात है कि पृथ्वीराज जैसा योद्धा जिसे न जीवन का मोह है न सम्पत्ति का, नारी के मोह में इतना ग्रस्त हो गया है।
परन्तु संयोगिता साधारण नारी नहीं है।
शासन की समस्याएँ भी साधारण नहीं हैं।
पृथ्वीराज तो प्रेम में खोये हुए थे, उधर ग़ज़नी का बादशाह, शहाबुद्दीन गोरी दिल्ली पर चढ़ाई करने की तैयारी कर रहा था।

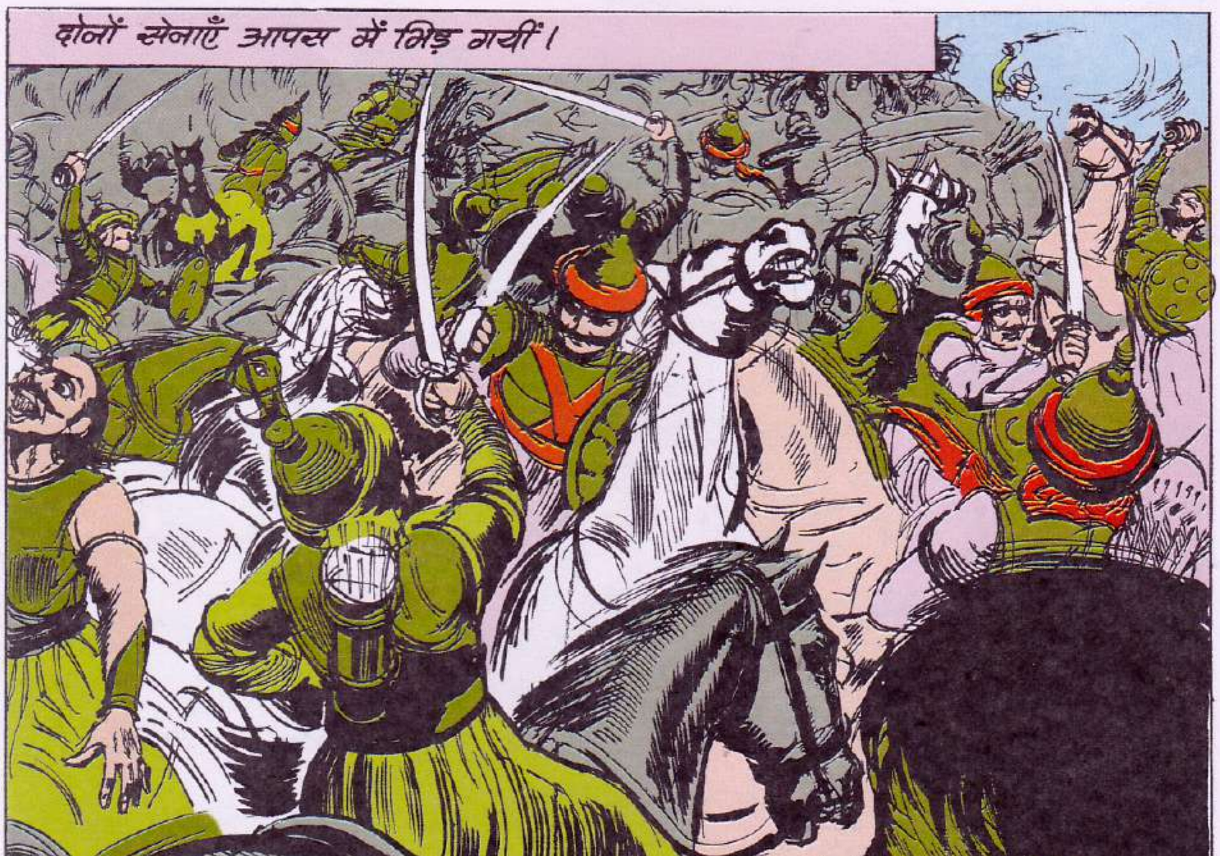

....मैंने सात बार हिन्दुस्तान को जीतने की कोशिश की लेकिन हर बार असफल रहा!
....और यह सब हुआ पृथ्वीराज की वजह से।
सातों वक्त पृथ्वीराज ने गोरी को पराजित किया, बन्दी बनाया और फिर दया करके उसे मुक्त कर दिया।

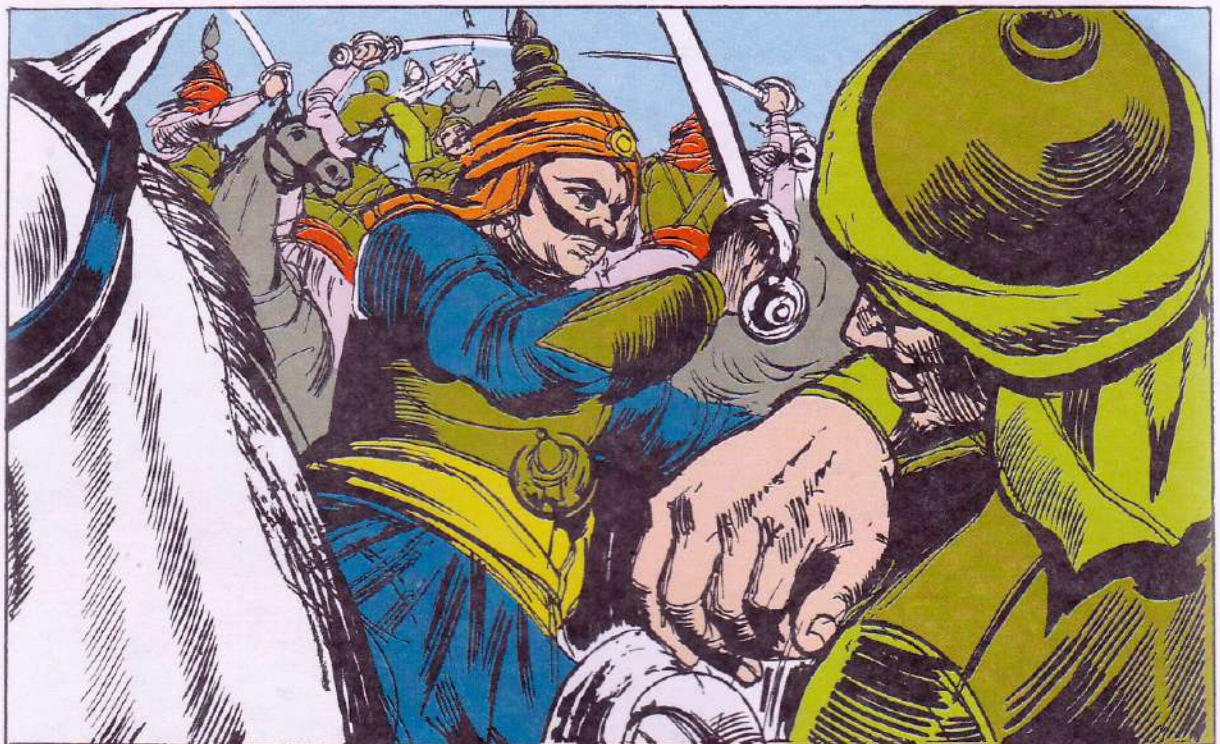

चूंकि इस बार जयचंद ने जरूरत पड़ने पर उसे मदद देने का वचन दिया था। गोरी को अपनी जीत का पूरा भरोसा था।
जयचंद मेरा दोस्त है। पृथ्वीराज को हराने का यही मौका है।
और इसप्रकार देशद्रोही जयचंद की सहायता से शहाबुद्दीन इस बार पहले से बड़ी सेना खड़ी कर सका था।


शहाबुद्दीन की सेनाएँ दिल्ली की ओर बढ़ने लगीं। दिल्ली के दरबारी सरदार बहुत चिन्तित थे।
राजा को सूचित भी कैसे करें? कोई भी जाये तो वे क्रोधित हो जाते हैं।
मैं उन्हें पत्र लिखूँगा।
गुरु जी का पत्र – क्यों?
प्रिय पृथ्वीराज, शत्रु हमारे देश पर आक्रमण करने को तैयार है। अभी समय है, राजा – चेत जाओ....
लज्जा की बात है! मैं अपना कर्तव्य भूल गया!


पृथ्वीराज का सेनापति तथा चुने हुए सैनिक जयचंद के साथ युद्ध में मारे जा चुके थे। इसलिए सेना दुर्बल हो गयी थी। फिर भी उन्होंने बचे हुए सैनिकों को एकत्र किया और शत्रु का सामना करने को चल दिये।


शहाबुद्दीन की सेना का संचालन तीन अनुभवी वीर कर रहे थे।


दोनों सेनाएँ आपस में भिड़ गयीं।



पृथ्वीराज और उनके मुट्ठी भर सैनिक असाधारण वीरता से लड़े।



परन्तु, सैनिक सब मारे गये और पृथ्वीराज शत्रु के हाथों गिरफ्तार कर लिये गये।

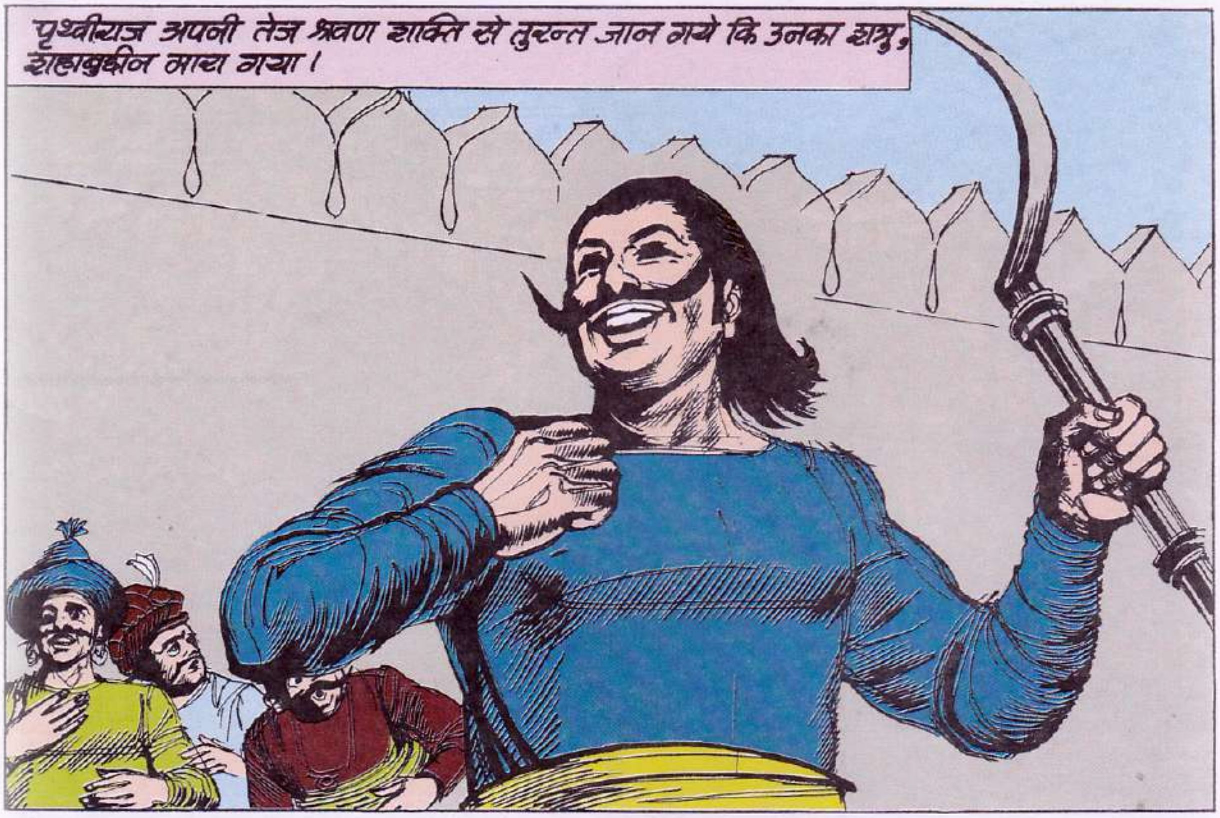

पृथ्वीराज को बन्दी बना कर गजनी ले जाया गया।
देखो, यही है दिल्ली का शेर बबर!
हा-हा!
नज़र झुका, काफ़िर! तेरी यह हिम्मत की मेरी तरफ़ देखे!
परन्तु पृथ्वीराज निर्भीक उसकी ओर देखते रहे।
सिपाहियो, इसकी आँखें निकाल लो!
और पृथ्वीराज को अन्धा कर दिया गया।


कवि चंद को पृथ्वीराज की दशा का पता चला तो वह साधु का भेष धारण कर ग़ज़नी के लिए रवाना हो गया।
शहाबुद्दीन जहाँ बाण चलाने का अभ्यास कर रहा था उस समय कवि चंद वहाँ पहुँचा।
कैसी लगी मेरी निशानेबाज़ी?
अच्छी है– लेकिन महाराज पृथ्वीराज के सामने बिल्कुल फीकी।
वे नोक रहित बाण से भी धातु के तवे को बेध सकते हैं।
नामुमकिन!
नामुमकिन नहीं है। वे अन्धे हो गये हैं फिर भी यह कर दिखायेंगे– ध्वनि के सहारे।
मैं यह चीज़ देखूगा– लेकिन वह न कर सका तो तुम्हारा सर कलम कर दूँगा।


कवि चंद ने बन्दीगृह में पृथ्वीराज से मिल कर अपनी योजना उन्हें बतायी।
अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए आप शहाबुद्दीन का वध कर के अपने का बदला ले सकते हैं।
परन्तु मुझे पता कैसे चलेगा कि वह कहाँ बैठा है?
यह मुझ पर छोड़िये।
अच्छी बात।
महाराज पृथ्वीराज शब्द बेधी बाण का कौशल दिखाने को तैयार हैं। परन्तु वे राजा हैं इसलिए किसी साधारण मनुष्य की आज्ञा का पालन नहीं करेंगे। बाण चलाने की आज्ञा स्वयं आप देंगे।
मंजूर है।


अगले दिन दरबार में –
तैयार- निशाना लगाओ-


आज्ञा सुनते ही, शहाबुद्दीन की वाणी के सहारे पृथ्वीराज ने तुरन्त घूम कर अपना बाण उस पर साधा –
चलाओ बाण–आ-आ-आह


पृथ्वीराज अपनी तेज श्रवण शक्ति से तुरन्त जान गये कि उनका शत्रु, शहाबुद्दीन मारा गया।

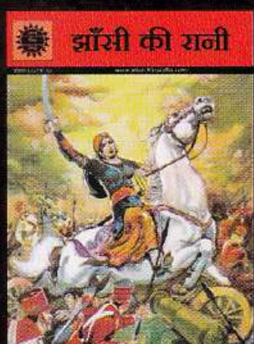

किन्तु शत्रु के सिपाहियों के हाथों अपमानपूर्ण मृत्यु के बजाय पूर्व योजना के अनुसार दोनों ने एक दूसरे के कटार भोंक दी।
महाराज पृथ्वीराज की जय!

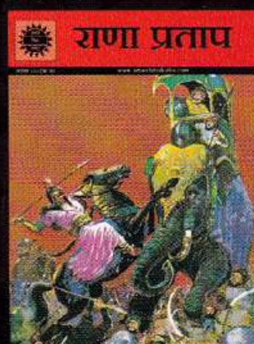
वीरांगना

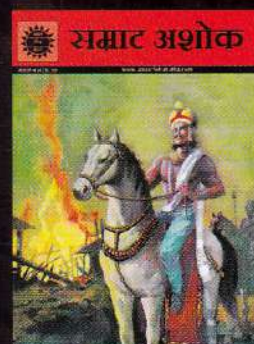
पृथ्वीराज चौहान

सन् ६४८ में कनौज के प्रतापी नरेश, महाराज हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद उत्तर भारत राजनीतिक रूप से बिखरने लगा। अनेक छोटे - छोटे राज्य बन गए और देश दुर्बल हो गया। छोटे -छोटे राजा अपने मिथ्या गर्व में परस्पर लड़ने लगे। विदेशी आक्रमणकारियों ने इस परिस्थिति का लाभ उठाया। बारहवीं शताब्दी के अंत में शहाबुद्दीन गोरी नामक अफगान सरदार ने गजनी को जीत कर, लाहौर पर चढ़ाई की और उसे भी जीता। वहां से वह दिल्ली की ओर बढ़ा। दिल्ली का राजा, पृथ्वीराज चौहान बड़ा वीर था। उसने अपनी सेनाओं के साथ गोरी से लोहा लिया, परंतु वह हार गया। भारत में मुसलमानों का शासन स्थापित हुआ। पृथ्वीराज चौहान ने शहाबुद्दीन गोरी के विरुद्ध ऐसी वीरता दिखाई थी कि पराजय के बाद भी वह अमर हो गए और उनकी वीरता की अनेक गाथाएं प्रचलित हो गईं। इन गाथाओं के आधार पर प्रस्तुत है वीर पृथ्वीराज चौहान की गाथा।

अमर चित्र कथा के अन्य वीरांगना :

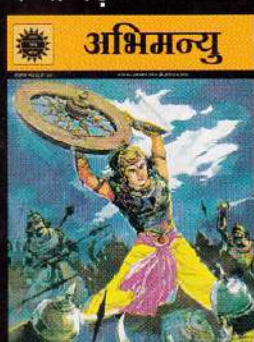




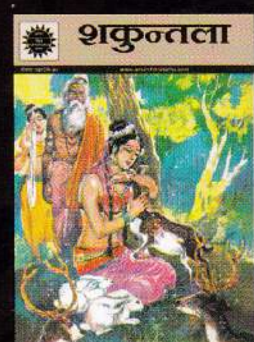




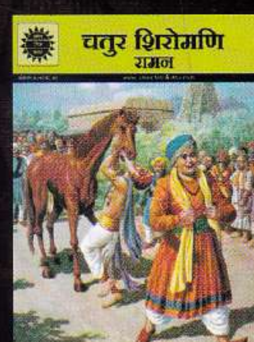
ये भी पढ़ें :



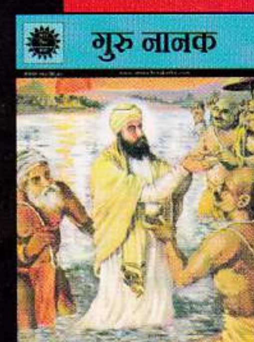
महाकाव्य और पौराणिक कथाएँ



भारतीय उत्कृष्ट साहित्य



हास-परिहास और दंतकथाएँ



दिव्यदृष्टा

ISBN 978-81-8482-314-1